A–0460

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–609

M.A. Sanskrit (MASL)

नाटक एवं नाटिका भाग-02

Examination, 2026 (Feb.)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(क) दृशः पृथुतरीकृता जितनिजाब्जपत्रत्विष-
श्चतुर्भिरपि साधु साध्विति मुखैः समं व्याहृतम्।
शिरांसि चलितानि विस्मयवशाद् ध्रुवं वेधसा
विधाय ललनां जगत्त्रय ललामभूताभिमाम्॥

(ख) शून्यैर्गृहैः खलु समाः पुरुषा दरिद्रः

कूपैश्च तोयरहितैस्तयभिश्च शीर्णैः।

यद् कृष्टपूर्व-जन संगम-विस्मृताना-

मेव भवन्ति विफलाः परितोषकालाः॥

(ग) कस्तं गुणारविन्दं शील मृगाङ्कं जानो न जानाति?।

आपन्न-दूःखमोक्षं चतुः सागरसारं रत्नम्॥

2. मृच्छकटिकम् नामक प्रकारण के आधार पर तत्कालीन सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

3. मृच्छकटिकम् में वर्णित चारुदत्त एवं वसंतसेना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रत्नावली नाटिका के प्रथम अंक में उल्लेखित राजा उदयन एवं विदूषक की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

5. रत्नावली नाटिका के प्रथम अंक का सार अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिये।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्न श्लोकों की अन्वय सहित व्याख्या कीजिए–

(क) श्रीहर्षो निपुणः कवि परिषदप्येषा गुणग्राणी।

लोके हारि च वत्सराजचरितं नाट्ये दक्षा वयम्॥

(ख) यथा यथा वर्षति अभ्रखंडम्, तथा तथा तिम्यति पृष्टचर्म।

यथा यथा लगति शीतवातस्तथा तथा वेपते में हृदयम्॥

2. वसंतसेना की चारुदत्त के प्रति अनुरक्तता को स्पष्ट कीजिये।

3. निम्न में से किसी एक विषय पर सूक्ष्म लेख लिखें–

(क) दुर्दिन वर्णन

(ख) कदलि गृह वर्णन

(ग) चारुदत्त का चरित्र

4. मृच्छकटिकम् के सप्तम अंक में वर्णित राजकीय अपराध का उल्लेख कीजिये।

5. रत्नावली नाटिका के द्वितीय अंक में उल्लेखित कदलिगृह की शोभा का वर्णन कीजिये।

6. रत्नावली नाटिका के प्रथम अंक के रचना विधान में कवि ने नाट्यशास्त्रीय सिद्धांतों का किस प्रकार पालन किया ? स्पष्ट कीजिये।

7. राजा उदयन द्वारा सौंपे गए कार्य को लेकर यौगंधरायण की संदेहात्मक स्थिति का वर्णन कीजिये।

8. रत्नावली नाटिका में वर्णित विदूषक की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

****